# मैवरिक का उद्भव

**–अरुण जेटली**

*राज्य सभा में विपक्ष के नेता*

चुनावों का समय है और हम इस समय वास्तव में चुनाव प्रचार में व्यस्त हैं। सभी राजनैतिक दल अपने चुनाव प्रचार की तैयारी करने, गठबंधन कायम करने, उम्मीदवार घोषित करने और चुनावी रणनीति को अंतिम रुप देने में लगे हुए हैं। संसाधन जुटाने और प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के लिए प्रचार सामग्री तैयार करने में ताकत लगाई जा रही है। बड़ी संख्या में सदाशयी लोगों ने चुनाव के दौरान राजनीति का रुख किया है। यह एक सकारात्मक प्रवृत्ति है। वह राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की भावना से प्रेरित हैं। पार्टियां फिल्म अभिनेताओं और अभिनेत्रियों, खिलाड़ी, किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करने वालों को विश्वास दिलाने में लगी हुई हैं और कुछ मामलों में तो उन्हें उम्मीदवार भी बनाया है। यह बहुत से लोगों के लिए पार्टियां बदलने का भी मौसम है। चुनाव के समय के दौरान एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाना अथवा दल बदल करना राजनैतिक ताकतों का दोबारा ध्रुवीकरण कहलाता है।

विद्रोहियों के लिए चुनाव एक अच्छा अवसर होते हैं। एक विद्रोही अपने आप में विचारों और कार्यों में स्वतंत्र होता है। वह विवादास्पद नियमों से बंधा नहीं होता। वह आम नागरिक होता है। वह तेज होता है और कभी–कभी विचित्र होता है। वह ऐसे सभी तरीके जानता है जिससे अपनी तरफ लोगों का ध्यान खींच सके। उसे अदला–बदली करने में कोई पछतावा नहीं होता। वह परम्परागत राजनीतिज्ञों की तुलना में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में अधिक रंगीन दिखाई देता है। सोशल मीडिया खासतौर से ट्विटर में विद्रोहियों के विचार शामिल करने के लिए काफी जगह है। बहुत से विद्रोही ' चीख चिल्लाहट' के दर्शन के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। वे ऐसे कारणों की तलाश में रहते हैं जिसे वे सहारा दे सकें।

'मैवरिक या विद्रोही' शब्द का उद्भव सैमुअल अगस्टस मैवरिक के नाम पर हुआ जो 19वीं शताब्दी में दक्षिणी कैरोलीना में जमीन के ताल्लुकेदार और एक विधायक थे। उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत भूमि ताल्लुकेदार के रुप में की और अपने पिता का व्यवसाय संभाला और उसके बाद कानून का अध्ययन करके एक लॉ ऑफिस खोला। टैक्सस क्रांति के दौरान उन्हें घर में नजरबंद कर दिया गया था। वह टैक्सस के मेयर रहे और अनेक निर्वाचित कार्यालयों में रहे। उनके पास थोड़े से मवेशियों का झुंड था जिन्हें घूमने की अनुमति दी और 'मैवरिक शब्द का तात्पर्य बिना ब्रांड वाले बछड़े से है।

भारत में अपने तरह के मैवरिक हैं। बहुत से स्वतंत्र विचारों वाले लोग कुछ समय के लिए पार्टियों में शामिल होते हैं और बाद में खुद को असहज महसूस करने लगते हैं। कुछ ने राजनैतिक दलों का गठन किया है। उनका स्टाइल गैर परम्परागत है। वे मुहावरों में दलीलें देते हैं जिनका इरादा अधिकतम प्रचार पाना होता है। किसी भी मैवरिक की बिना किसी ठोस सबूत के आरोप लगाने की आदत होती है। परम्परागत राजनीतिज्ञों की उनके मुद्दों में कोई खास दिलचस्पी नहीं होती क्योंकि एक विद्रोही या मैवरिक पीठ पीछे वार करता है। वह वाइल्ड कार्ड है।

मैं हमेशा सोचता हूं कि विद्रोहियों से कैसे निपटा जाए। क्या आप उन सवालों के जवाब दे पाएंगे जो विद्रोही आपसे पूछेंगे? क्या आप उससे मिलेंगे अगर वह जबरन आपका दरवाजा तोड़कर आपके घर में घुस जाए? क्या आप उसके साथ स्वयं को बांधकर उसे केन्द्र में रखेंगे या उसकी अनदेखी करके अपने एजेंडा तय करने का परम्परागत तरीका जारी रखेंगे? मुझे लगता है यही सुरक्षित विकल्प है। किसी विद्रोही को चुप्पी ही सबसे अच्छा जवाब हो सकती है। चुप्पी गौरवशाली होती है। यह आपको किसी विद्रोही के विचित्र एजेंडा में उलझकर होने वाली परेशानी से बचाती है।

नरेन्द्र मोदी को अरविंद केजरीवाल के दर्शकों से बचने की सही सलाह दी गई है।

*****